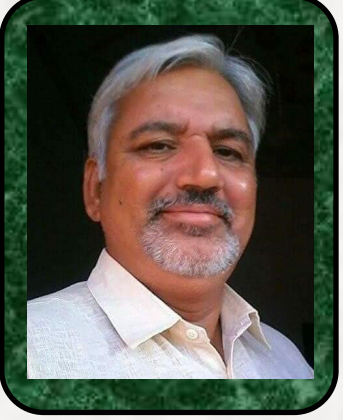

राजपाल सिंह गुलिया

दोहे

किस मुँह से अब मैं करूँ , अपनों का गुणगान ।
जिनके कारण हो गए , रिश्ते लहूलुहान ।।

विपदा आती गर कभी , रिश्ते बनते ढाल ।
रिश्ते ही अब खींचते , यहाँ बाल की खाल ।।

सोचा था संसार में , नेक करेंगे काम ।
पता नहीं कब किस तरह , जीवन हुआ तमाम ।।

नहीं किसी की हार ये ,नहीं किसी की जीत ।
समय बिताते आदमी , खुद ही जाता बीत ।।

फूली सरसों को दिया , जलभूषण ने छेड़ ।
बिना बात जलभुन गया , तभी मेंड़ का पेड़ ।।

किया शहर ने गाँव को , ऐसा आज गुलाम ।
चल देता है भोर में , करने गाँव सलाम ।।

कटी फटी सी जिन्स को , मिला पाँव का प्यार ।
लहँगा गोटेदार तब , चला गया मन मार ।।

खारे सागर से चली , मिलन नदी की धार ।
ताल - तलैया रह गए , करते सब मनुहार ।।

कलुआ आया रात को , करके मदिरापान ।
दिया देश के हाल पर , बहुत गजब व्याख्यान ।।

बच्चों में बच्चा कभी , बनकर देखें आप ।
यूँ चुटकी में आपके , मिटें सभी संताप ।।

द्रोण छोड़ शाला गया , होकर तब लाचार ।
एकलव्य को जब मिला , शिक्षा का अधिकार ।।

काबिज़ है अब नीड़ पर , कोयल की औलाद ।
काक बाल हैं बेदख़ल , करें कहाँ फ़रियाद ।।